समुद्री स्तनियों की जीवसंख्या निर्धारण के लिए गहरा समुद्र अनुसंधान पर्यटन

समुद्री स्तनियों के परिरक्षण से भारतीय समुद्री खाद्य व्यापार को बढाने की पहल

भारतीय समुद्री खाद्य को बढाने के मुख्य प्रयास के रूप में केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ) और समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण और भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण (एफ एस आइ) ने ई ई इज़ेड की समुद्री स्तनी जीवसंख्या के निर्धारण के लिए अनुसंधान पर्यटन की शुरुआत की। उच्च मूल्य संपदाएं और भारत के निर्यात बाज़ार को लक्षित करके मछुआरों द्वारा सामना कर रहे समुद्री खाद्य से संबंधित चुनौतियों को मद्देनज़र करते हुए अनुसंधान पहल की शुरुआत की । राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन (एन ओ ए ए), यु एस ए ने अपने देश में समुद्री स्तनी संरक्षण अधिनियम (एम एम पी ए) जारी किये है जो समुद्री खाद्य निर्यात देशों को वाणिज्यिक मात्स्यिकी में समुद्री स्तनियों को जानबूझकर हत्या करने की अनुमति नहीं देंगी। मछली और मछली उत्पादों के निर्यात के लिए यु एस ने दिनांक 1 जनवरी, 2017 के प्रारंभ से समुद्री स्तनियों के प्रभव निर्धारण, उप पकड़ का आकलन, पकड़ की सीमाओं की गणना और कुल उप पकड़ को कम करने क द्वारा विनियामक कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए राष्ट्रों को पांच वर्ष की छूट दी है।

अनुसंधान पर्यटन का उद्घाटन

अनुसंधान पर्यटन का लक्ष्य विविध मंत्रालयों के अधीन कार्यरत तीन प्रमुख केन्द्रीय एजेंसियों की संयुक्त पहल के रूप में समुद्र विज्ञान पैरामीटरों का आकलन करने के लिए समुद्री स्तनी प्रभवों की निगरानी, निरीक्षण और वैज्ञानिक विचार-विनिमय है।

सी एम एफ आर आइ निदेशक डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने कहा कि यह अनुसंधान मात्स्यिकी की आजीविका को बढाने और समुद्री खाद्य के निर्बाध निर्यात को सुनिश्चित करके पारितंत्रिक रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों के परस्पर प्रभाव की कमी और समुद्री स्तनियों के परिरक्षण के लिए गेम-चेंजर (game-changer) के रूप में उभरेंगे। यह मिशन एफ एस आइ के आधारिक संरचना सहयोग और एम पी ई डी ए की वित्तीय सहायता से सी एम एफ आर आइ द्वारा कार्यान्वित और कल्पित अग्रणी अनुसंधान परियोजना के नेतृत्व करने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि यह वैश्विक प्रभाव के साथ राष्ट्रीय महत्त्व

अनुसंधान पर्यटन का उद्घाटन

गहरा सागर अनुसंधान पोत का दृश्य

की परियोजना है जो सफलतापूर्वक पूरा होने पर चुनिन्दा राष्ट्रों के बीच समुद्री स्तनियों पर हमारे अनुसंधान स्तर को स्थापित करेंगे ।

डॉ. आर. जयभास्करन, परियोजना के मुख्य अन्वेषक और सी एम एफ आर आइ के वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि "यह परियोजना मुख्यतः भारतीय समुद्र में समुद्री स्तनियों और समुद्री कच्छपों की सभी प्रजातियों के प्रभव स्वास्थ्य की स्थिति के निर्धारण पर केन्द्रित है। समुद्री पारितंत्र को बनाए रखने में समुद्री स्तनियों और समुद्री कच्छपों की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

एम पी ई डी ए के अध्यक्ष श्री के. एस. श्रीनिवास, आइ ए एस द्वारा डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, डॉ. एल. रामलिंगम, महा निदेशक, एफ एस आइ और डॉ. आर. जयभास्करन की उपस्थिति में मिशन की शुरुआत की।

इस पोत में 4 स्ट्रोक वोल्वो पेंटा सहित 500 बी एच पी इंजन , ओ ए एल (एम): 24 & जी आर टी: 268.8 शामिल है। पोत के मुख्य डेक में वैज्ञानिकों और कर्मी दल के लिए कमरा, मौसम स्टेशन, गैली, मेस रूम और शौचालय शामिल हैं ।